बोध-वाक्य

समानो मंत्रः समितिः समानी समानं व्रतं सहचित्तमेषाम् । समानेन वो हविषा जुहोमि समानं चेतो अभिसंविशध्वम् ॥	(अथर्व वेद ६.६४.२) हे बंधुओं! हमारे विचार समान हों । हमारी सभा सबके लिए समान हो । हम सबका संकल्प एक समान हो । हम सबका चित्त एक समान भाव से भरा हो । एक विचार होकर अपने कार्य में एक मन से लगे । इसीलिए हम सबको समान मौलिक शक्ति मिली है ।

केशवसृष्टि समाचार

मासिक

वर्ष १०, अंक ४ मूल्य रु. १०/-

अप्रैल २००९ वार्षिक रु. ५०/-

संपादक : महावीर प्रसाद शर्मा

कार्यकारी संपादक : लक्ष्मण गुप्ता, शोभाताई थिटे

संपादक मंडल : विजयालक्ष्मी सामवेदी, सत्यदेव बंका, जगदिश्चंद्र पाटील।

कार्यालय : केशवसृष्टि, उत्तन, भाईंदर, जि. ठाणे.

दूरभाष : २८४५०२४७, २८४५२८५५

यह पत्रिका मुद्रक एवं प्रकाशक सुरेश भगेरिया द्वारा केशवसृष्टि के लिए **युनिटी आर्ट ऑफसेट** ३०२, वडाला उद्योग भवन, वडाला, मुंबई - ३१ से मुद्रित और केशवसृष्टि, उत्तन, भायंदर, जि. ठाणे से प्रकाशित हुई है.

अंतरंग .....

कार्यवाह की कलम से ४

समाचार ५

अध्ययन एवं परीक्षा की तैयारी ११

वानप्रस्थाश्रम से हो सकती है परमलक्ष्य की प्राप्ती १२

बहुपयोगी उत्पाद १३

श्रीगुरुजी : दृष्टि और दर्शन १५

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम १६

संपादकीय

अनेकानेक हृदयों में राष्ट्र प्रेम की ज्योत जलाने, अपने इस परम पवित्र राष्ट्र को एक बार फिर परमवैभव के उच्च शिखर पर विराजमान करने का स्वप्न देने वाले और इस स्वप्न को साकार करने का अमोघ अस्त्र प्रदान करनेवाले आद्य सरसंघचालक परमपूज्य डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार जी का अवतरण इस भरत भूमि पर वर्ष प्रतिपदा गुढीपाडवा अप्रैल १८८९ (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) को हुआ था। डॉक्टर जी ने अपना समस्त जीवन राष्ट्र को समर्पित कर दिया और आनेवाली पीढ़ियों को इसी मार्ग पर चलने हेतु हिंदू संगठन का मूलमंत्र दिया। आज के भाषायी, जातीय और क्षेत्रीय आधार पर उठ रहे विवादों के बादलों को संघ के प्रत्येक स्वयंसेवक ने दूर करना है और एक संगठित सशक्त समृद्ध हिंदू राष्ट्र को परम वैभव के शिखर पर पुनः स्थापित करना है।

इस माह अनेक समाज सुधारकों तथा २४वें तीर्थंकर महावीर स्वामी, संकटमोचन हनुमान जी, भारतरत्न स्व. डॉ. भीमराव आंबेडकर, महात्मा ज्योतिबा फुले आदि प्रातः स्मरणीय एवं अनुकरणीय विभूतियों की जयंती मनायी जाती है, महावीर स्वामी ने जहां अपनी आवश्यकताओं को सीमित करते हुए और यथासंभव कष्ट भोग करते हुए जीवनमात्र को सुखी करने का संदेश दिया, वहीं डा. भीमराव आंबेडकर और महात्मा ज्योतिबा फुले ने समाज के उपेक्षित एवं तिरस्कृत वर्ग को शेष समाज में सम्मान दिलाने के लिए अपना जीवन होम कर दिया, रामभक्त पवनसुत हनुमान जी ने एक ओर जहां भगवान श्री राम के असाध्य कार्यों को सम्पन्न किया वही शारीरिक बल के साथ बुद्धि, विवेक और ज्ञान का समन्वय कर उनकी समवेत आवश्यकता पर बल दिया। सिख पंथ के दसवे गुरु गोविंद सिंह जी ने बैसाखी के दिन आनंदपुर साहिब में खालसा पंथ की स्थापना कर एक ओर सामाजिक समसरता का मार्ग प्रशस्त किया, वहीं समाज हित में पांच कक्के (केश, कच्छ, कृपाण, कड़ा और कंघा) धारण कर सैनिक वेश धारण करने का संदेश दिया। इन सभी समाज चिंतकों की जयंतियां मनाना तभी सार्थक होगा जब हम उनके संदेशों, आदेशों एवं शिक्षाओं का पूरी निष्ठा और ईमानदारी से अनुकरण-पालन करें, हमें सदा ही यह ध्यान रहे कि समष्टि में ही व्यष्टि समाहित है, उसका हित है, सबका भला करेंगे तो अपना भी भला होगा। पंद्रहवी लोकसभा के गठन के लिए महासमर (आम-चुनाव) की घोषणा हो चुकी है, विभिन्न राजनैतिक दल और उनके गठबंधन इस महासमर में ताल ठोक कर अपनी अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रहे हैं। यही वह समय है जब देश का सजग और प्रबुद्ध नागरिक अपने देश और समाज को समुचित दिशा देने में अपनी सार्थक भूमिका निभा सकता है। वह देश और समाज को अपेक्षित रूपाकार देने में अपने अधिकार का प्रयोग कर सकता है। यदि समाज का यह वर्ग अपने अधिकारों के ठीक समय पर उपयोग की उपेक्षा करता है तो पश्चाताप और हताशा के अलावा कुछ हाथ नहीं लगता और तोहमत यह लगती है कि आप ही ने तो यह सरकार चुनी है। तो आइए, उठिए और अपने अपने निर्वाचन क्षेत्र में मतदान के सुनिश्चित दिन अपने मताधिकार का उपयोग जल्दी से जल्दी कीजिए और अपने राष्ट्रीय कर्तव्य का पालन कीजिए।

संपादक

कार्यवाह की कलम से...

आधुनिक व्यवस्थापन

आज संपूर्ण जगाचे सामाजिक व आर्थिक चित्र झपाट्याने बदलत आहे. जागतिकीकरण, खाजगीकरण आणि मुक्त अर्थव्यवस्था ही आजची चलनी नाणी बनली आहेत. युरोपातील औद्योगिक क्रांतीच्या काळात समाजवादी व कम्युनिस्ट तत्त्वज्ञानाने वर्गविरहित समाजाची संकल्पना हिरीरीने मांडली. काही देशात ही संकल्पना अमलात आणण्याचे प्रयत्न झाले. त्यासाठी कोट्यवधी लोकांना आपले प्राणही गमवावे लागले. चीन व रशिया ही याची दोन ठळक उदाहरणे आहेत. समाजवाद्यांचे हे तत्त्वज्ञान मूलतः भौतिकवादावर आधारलेले होते. समता, बंधुता, समृद्धी, एकता ही महान तत्त्वे जीवनात रुजविण्यासाठी त्यांनी सर्व प्रकारचे उपाय योजले; पण कालौघात हे संपूर्ण तत्त्वज्ञानच अपयशी ठरल्याचे जगाने अनुभवले.

कम्युनिझमच्या या पराभवातून पुन्हा एकदा भांडवलशाहीने डोके वर काढले असून जत्रेमध्ये हरवलेल्या एखाद्या बालकासारखे हतलब झालेले समाजवादी आज भांडवलशाहीपुढे हात पसरत आहेत. कम्युनिस्टांनी जे प्रश्न जगापुढे मांडले त्याच 'प्रश्नां'कडे ते आज 'उत्तरांची' अपेक्षा करीत असल्याचे दिसत आहे. परंतु भांडवलशाहीच्या मार्गाने समता, बंधुता, एकता व समृद्धीचा मार्ग जगाला सापडेल याची कणभरही शाश्वती कोणालाच वाटत नाही. ही दोन्ही तत्त्वज्ञाने मानवापुढच्या समस्या सोडविण्यात अपयशी ठरली असून आज अत्युच्च भौतिक प्रगतीकडे झेपावणारा मानव या बाबतीत मात्र अंधारात चाचपडत आहे. दहशतवाद, गरीबी, लोकसंख्येचा स्फोट, अशिक्षितपणा, गुन्हेगारी, लैंगिक शोषण आणि शासनव्यवस्थेतील भ्रष्टाचार कमी न होता दिवसेंदिवस वाढतच आहे. आपण सर्वजण जाणते-अजाणतेपणे या वस्तुस्थितीचा मूकपणे स्वीकार करीत आहोत. ज्यांना या अपप्रवृत्तींशी लढायचे आहे त्यांना नेमकी दिशा मिळत नसून तेही नुसते 'प्रेक्षक' बनले आहेत. यावर काहीच उपाय नाही का?

आहे! भारतीय तत्त्वज्ञानामध्ये अशा उपायांचा दिशाबोध निश्चितपणे होऊ शकतो. अनेक महान विभूतींनी जगाच्या कल्याणाचे मार्ग सांगितले आहेत पण जगाने त्याकडे दुर्लक्ष का केले? कारण त्या मार्गावर कसे चालायचे हेच सांगितले किंवा शिकविले गेले नाही. येथेच भारतीय शिकवणुकीचे वेगळेपण दिसून येते. मन, मनगट व मेंदू यांच्यावर संस्कार करीत व्यक्ती ते समष्टि यांना कसे तयार करायचे याचा सुस्पष्ट कृती कार्यक्रम 'दासबोधा'त मिळतो. काळाप्रमाणे त्यात आवश्यक ते बदल करून आपण निश्चितपणे आपली मार्गक्रमणा करू शकतो.

'व्यवस्थापन' हा शब्द एकाच वेळी दोन अर्थ ध्वनित करतो. व्यवस्थापन हे एक कार्य आहे आणि त्याचवेळेस ते कार्य करणाऱ्या माणसांना देखील 'व्यवस्थापन' च म्हणतात. साध्य आणि साधनाची एकरूपता या शब्दात आहे. व्यवस्थापन कसे आहे यावर त्या संस्थेची प्रतिष्ठा आणि पत मोजली जाते आणि त्याचवेळेस व्यवस्थापन हे एक शास्त्र आहे आणि अभ्यासाचा विषयही आहे.

आज व्यवस्थापन शास्त्र जेवढे प्रगत झाले आहे तेवढे ते पूर्वी कधीही नव्हते. हा सर्व क्रांतिकारी बदल गेल्या १००-१२५ वर्षांचा आहे. पूर्वी शासनपद्धती सोडली तर समाजात संस्थाजीवन असे फार तुरळक असे. आजचा समाज मात्र झपाट्याने संस्थामय होत चालला आहे. कोणतेही मोठे सामाजिक कार्य-मग ते आर्थिक स्वरूपाचे असो किंवा शिक्षण, आरोग्य, पर्यावरण, क्रीडा, संशोधन किंवा सुरक्षाविषयक असो, ते आज मोठमोठ्या संस्थांकडे सुपूर्द केले जाते. या संस्था स्वयंशासित असून सातत्याने काम करीत असतात. आधुनिक समाजाची कार्यक्षमता म्हणजे जणु या संस्थांचीच कार्यक्षमता होय असे आजचे चित्र आहे. बदलत्या वातावरणात कुटुंब व्यवस्था टिकवणे दिवसेंदिवस अवघड होत चालले आहे. कुटुंबाचे व्यवस्थापन जसे त्या कुटुंबाच्या कर्त्याकडे असते तसेच संस्थांचे भवितव्य देखील त्यातील प्रमुख संचालकांवर अवलंबून असते. काही सहकारी संस्था यशाची नवनवी शिखरे गाठतात तर काहींना मात्र बरखास्तीची सजा भोगावी लागते. हे सर्व बरेवाईट परिणाम संचालकांवरच अवलंबून असतात. म्हणून संस्थाजीवनाचे व्यवस्थापन त्यातील व्यक्तींच्या गुणवत्तेवरच बहरत किंवा ओसरत असल्याने यशस्वी संस्था चालविण्यासाठी योग्य व्यक्ती तयार करणे हे आजच्या व्यवस्थापन शास्त्राचे मुख्य कार्य आहे.

– सतीश सिन्नरकर – कार्यवाह, केशवसृष्टि ■

यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ नाशिक की मूल्यांकन समिति द्वारा कृषि महाविद्यालय का निरीक्षण

२ मार्च २००९, सोमवार के दिन यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ नाशिक की मूल्यांकन समिति ने केशवसृष्टि कृषि तंत्र महाविद्यालय का निरीक्षण किया। इस समिति में विद्यापीठ (विश्वविद्यालय) के निदेशक माननीय श्री राजेंद्र वाघ, डॉ. चौधरी शामिल थे। इस समिति ने विद्यालय में उपलब्ध भौतिक सुख-सुविधा, विद्यालय की इमारत, कार्यालय, प्रयोग-शाला, फलों के बाग वाले क्षेत्र, रोपवाटिका, तकनीकी कर्मचारी वृंद तथा अन्यान्य साधन सामग्री का निरीक्षण किया।

कृषि शिक्षण केंद्र के संदर्भ में उन्होंने आज तक के व्यवस्थापन (प्रबंधन) अहवाल, कागजपत्र, सभी आवश्यक रजिस्टर्स तथा अन्य रिकार्डस् इत्यादि की जांच पडताल की और उन के प्रति संतोष व्यक्त किया।

इसके बाद उपरोक्त समिति ने केशवसृष्टि परिसर में कार्यरत संस्थाओं का भी दौरा किया। समितिने विद्यालय के प्रक्षेत्र पर लगे नारियल बाग, काजू बाग, आम के बाग, और सब्जी तरकारी की खेती का निरीक्षण किया। इस समय श्री राजेंद्र वाघ जी ने कहा कि सेंद्रिय (जैविक) खेती पर विशेष जोर दिया तो पैदावार की गुणवत्ता (Quality) अधिक बेहतर ढंग से रखी जाती है। उन्होंने निरीक्षण से संतुष्ट होते हुए कहा कि केशवसृष्टि कृषि तकनीकी विद्यालय, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ के विविध शिक्षा-पाठ्यक्रमों को लागू करवाने में पूर्णरूपेण सक्षम है।

(केशवसृष्टि कृषितंत्र महाविद्यालय)

किसन गोपाल राजपुरिया वानप्रस्थाश्रम का लक्ष्य

हमारी इस संस्था का मुख्य उद्देश्य है कि आज के समाज की यह दशा है कि अपने माता-पिता की सेवा करना नहीं चाहते और उनकी देखरेख के लिए समय नहीं रहती। उन सभी वृद्ध की सेवाभाव से इस संस्था का निर्माण किया गया। इस संस्था के माध्यम से हमारे यहां रहने वाले सभी निवासी जनों को संसार में आने का हमारा कार्य पूर्ण हुआ इस का ज्ञान करा करके वानप्रस्थाश्रम के कार्य का ज्ञान करते है। उनको बताया जाता है कि वानप्रस्थाश्रम के माध्यम से परमब्रह्म परमात्मा की प्राप्ती की जा सकती है और इस आश्रम के ऐसे अस्थान पर बनाया गया है, जो कि स्वच्छ हवा, स्वच्छ वातावरण, और मन को शांती प्रदान करने वाला स्थान है। हमारा दूसरा लक्ष्य है कि सभी निवासी अपना जीवन वृथा में न गंवाये। इसके लिए उस संस्था में विशाल शिवध्यानालय का निर्माण कराया गया है। और प्रत्येक दिन इसी मंदीर के परिसर में सत्संग के माध्यम से निवासियों को उनके जीवन को उच्चतम अस्तर तक पहुंचाने का कार्य किया जाता है। हमारी संस्था निवासियों के स्वास्थ्य, ज्ञान और परम लक्ष को प्राप्त करने के लिए भरपूर प्रयास करती है। और सभी निवासी भी इस कार्य को सफल बनाने में कार्य करते हैं। इस कार्य को देख इस संस्था में मार्च महीने में चार निवासी और आगये। सभी इस प्रकार के कार्य से प्रसन्न हैं।

व्यवस्थापक, किसन गोपाल राजपुरिया वानप्रस्थाश्रम

हमें अपने दोषों का परिमार्जन करना होगा

''समाज में सभी को कुछ न कुछ काम करना होता है लेकिन जिन्हें सफाई का काम संभालना पड़ा, उन्हें अछूत बना दिया गया। अपने परिवार में मां बच्चे की गंदगी और बीमारी में उल्टी साफ करती है लेकिन वहां सब समान होते हैं। तो फिर समाज में सफाई का काम करनेवाले अछूत कैसे हो सकते हैं? हरिजन समाज ने वाल्मीकी और रविदास जैसे भक्त दिये, लेकिन भगवान के भक्तों को ही मंदिर में प्रवेश से वंचित कर दिया जाता है। अगर उनमें से कोई ईसाई हो जाता है तो वह हमारे सम्मान का पात्र हो जाता है, लेकिन अपने माधव को हम अपने गले नहीं लगाते। इन प्रवृत्तियों को बदलना होगा। हमारे कई दोष हैं जिनका परिमार्जन करना होगा।'

प.पू. रज्जू भैया

रासायनिक खाद से जमीन में तत्वों की कमी – सुदर्शन जी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री सुदर्शन जी ने कोटा में कहा कि रासायनिक खाद के अधिक उपयोग से जमीन में सूक्ष्म तत्वों की कमी हो जाती है और बाद में ज्यादा खाद देने पर भी उपज नहीं बढ़ती है। इसी के परिणामस्वरूप देश के २ लाख से अधिक किसान ऋणग्रस्त होकर आत्महत्या कर चुके हैं। सुदर्शन जी ने गत २० जनवरी को कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़ जिलों से आए जैविक कृषि करनेवाले ५०० से अधिक किसानों को संबोधिक किया। जैविक कृषि में गोबर की खाद, वर्मी खाद, केंचुआ खाद और इसी तरह की देशी खाद काम में ली जाती है। इस अवसर पर ५ बीघा से अधिक भूमि पर ऐसी खेती करने वाले किसानों को सम्मानित भी किया गया।

Science Day in RRVM

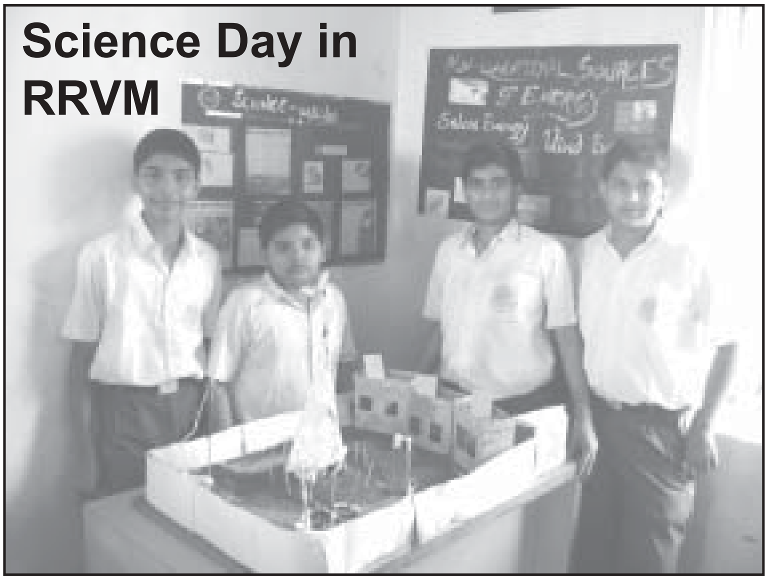

National Science day which is celebrated in India on 28th February every year was a grand success in Ram Ratna Vidya Mandir as well. Wherein enthusiastic students of class iv to xi participated with great scientific temper and creativity.

From each class there were almost 5 groups with their projects based on different topics. This exhibition inculcated in them the values like team work with a sense of co-operation and responsibility, to impart knowledge and maximum utilization of available resources. Many of the students have made the best out of waste and come up with beautiful, useful, informative and creative teaching aids-charts and models. Total seven groups were declared winners and were rewarded with a one day trip as their prize. The Principal, Mrs. Anita Sahu and the teaching staff appreciated the students' endeavour and zeal.

Mrs. Kavita singh, Physics Teacher

Pie Day celebration in RRVM

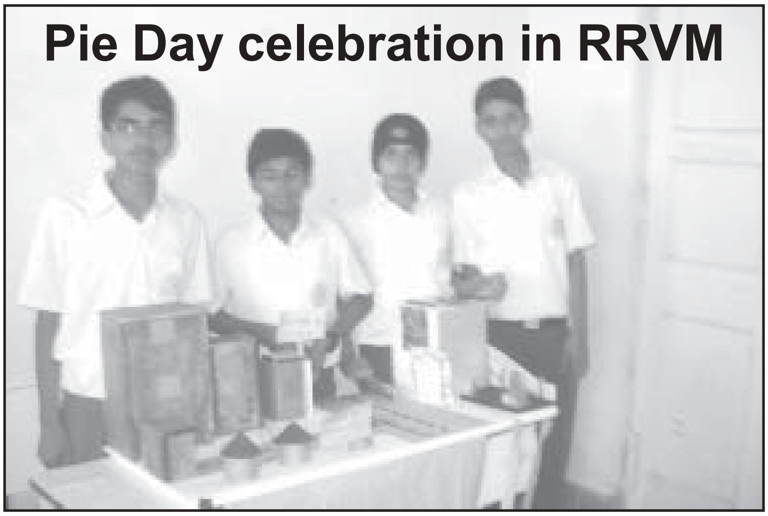

Pi is a mathematical concept. Pi Day is observed on March 14, 3.14 being the first three digits of pi. It is also Albert Einstein's and Waclaw Sierpinski's birthday.

Pi Day is nowadays celebrated widely across the whole world. In India it is celebrated every year in so many places. Amongst them RRVM is one.

It is RRVM's 2nd year of pie day celebration. Students from Std 4th to Std. 11th (except std 10th) took part in this celebration.

This year student celebrated Pid day enthusiastically, where they used their mathetatical knowlege what they have studied till now. Students showed their potential through different models, around 50 concepts of mathematics which is used in day to day life. Such s area, perimeter, volume of cubes, cuboids, cylinder, sphere, hemisphere in different forms. Students exhibited models on triangles, circles, parallel lines, conic section, 2D and 3D etc. as well as Algebra.

The students have indeed put up their creative best on this day and were highly appreciated by the Principal and the judges.

Mathematics Dept., RRVM.

Colors Splash in R.R.V.M.

Holi, the day of colors, sweets and lot of enjoyment was celebrated this year on 11th March. It is the day of victory over evil. RRVM celebrated Holika Dahan, on 10th of March, the day before playing with colors. The students of the school wrote their mistakes and wrong done on piece of paper and threw that in the fire of Holika to start up a new series of student life without any grudge on each other.

The celebration with colors was as enjoyable as any other festival of the country. The students along with Principal didi and teachers enjoyed the day dancing and smearing the colors on each others' face. The sip of thandai gave them more energy to enjoy the celebration of Holi.

Kusum Pathak, (English Dept.)

Guest of the Month

Under the Guest of the month programme, we had Dr. Hrish Shetty the renowned Psychiatrist visiting Ram Ratna Vidya Mandir on 14th March at around 11 am. He conducted two sessions, the first wherein the interacted mainly with the students and the second with the teachers.

Known for his excellent sense of humour, he enthralled our students for more than one hour. He emphasized that the students should feel free to open up their feelings with their teachers and that it is only the 'love' and 'concern' factor that makes a teacher or a parent strict.

The second session with the teachers was also an enlightening and entertaining one. He advised the teachers to understand the problem of students to use different techniques in teaching and to accept their free talks positively.

Overall the sessions were not only and enjoyable one for the students and teachers but also that which solved their queries and problems.

Mrs. Sabita Shinde (HOD, English Dept.)

श्रीमती रेखा महाजन जी की वानप्रस्थाश्रम को भेंट

रविवार दि. २२ मार्च २००९ की चिंतन बैठक के निमित्त श्रीमती रेखा प्रमोद महाजनजी का केशवसृष्टि में आगमन हुआ था। बैठक के प्रथम सत्र के बाद उन्होंने किशन गोपाल राजपुरिया वानप्रस्थाश्रम को भेंट की। वानप्रस्थाश्रम में उन्होंने वानप्रस्थाश्रम के कार्यालय का व्यवस्थापन, वानपप्रस्थीयों की निवास व्यवस्था, भोजनालय, चिकित्सालय, शिवध्यान केंद्र आदी का अवलोकन किया। श्रीमती महाजन जी ने वानप्रस्थीयों से वार्तालाप कर उनका हालचाल एवं स्वास्थ्य की पूछताछ की। सभी वानप्रस्थीयों ने बड़ी ही गर्म जोशी के साथ उनका स्वागत किया।

वानप्रस्थाश्रम के अध्यक्ष श्री. योगेंद्र राजपुरियाजी ने श्रीमती महाजन को वानप्रस्थाश्रम की अन्य गतिविधियों एवं भविष्यकालीन योजनाओं की जानकारी दी। करीब ३० मिनट तक वानप्रस्थाश्रम का अवलोकन करने के बाद श्रीमती महाजन ने मुंबई के लिए प्रस्थान किया।

I LOVE MY PARENTS

I Love my parents
who had given me birth
who took my care from my birth

I love my parents
who thought me - how to walk
who thought me - how to defeat the world.

I love my parents
who helped me to see this beautiful world.
who helped me to be creative.

I love my parents
who scold me when I was wrong,
who caressed me when I was lonely

I love my parents
who taught me that nothing is impossible,
who created a man of possibility-
to achieve what he wants.

And I love my parents
who turtured and taught me to take
right decision at right time
who turned me into 'I'

- Sunil S. Sinaa and
- Avinash R. Soni (IX A)

The importance of scientific thinking or logical thinking

Long ago there lived a teacher who was known for hismastery over four subjects. Namely philosophy, astrology, numerology and logic. He had four students with him, each student was learning one subject. No two subjects were being taught to a student .However, the teacher used to spend more time with the student who was learning logic. The teacher's wife was observing this everyday. A doubt came in her mind, so she dedliced to know from her husband why her husband showed partiality among his students. When she approached her husband, the teacher told her that she would know the answer to her doubt but she should follow what her husband had instructed her to do. He told her when the students come to his resident next day, she should tell them that her husband swallowed a snake and died. The wife was surprised when she heard about her husband but she obeyed her husband and reported what her husband instructed her to say when the students came. The next day morning the first student who arrived, was learning philosophy. when he heard his teacher's death, he felt sorry and left the residence by stating that any one born in this earth should perish some day. When the student learning astrology arrived, he too left the residence by telling that that the stars were not favorable and as a result his teacher might have left this world. When the student who was learning numerology arrived he believed and stated that all numerals additions are correct how did he died? There must be some problem in my calculation and left the reisdence. At last logic student arrived he did not believe in it he asked so many questions, the last question he asked how a snake could be swallowed by his teacher. He forced himself in to teacher's residents and found that his teacher was alive. The moral of this story is to think before one arrives at conclusion. Thinking implies rational, or logical or scientific thinking. It is sad but true that majority of people do not apply their mind before arriving at a conclusion. If this thinking process will develop in every individual definitely world will prosper.

Mr. Dilip Das, HOD Math Dept.

*** प्रेरक ***

जहां चाह, वहां राह

AmR> Aà¡b 1978 H$m{ df© àoV[Xm H{$ oXZ
oX„r H{$ A§]{S>H$a ñQ>{oS>`__| JUd{fYmar
ñd`§g{dH$m| H$m{ g§]m{oYV H$aV{ h|E VËH$mbrZ
gag§KMmbH$ [yOZr`]mbmgmh] X{dag Z{
ñ[ï>ê$[g{ ñd`§g{dH$m| H$m Amh²dmZ oH$`m oH$
d{ g_mO H{$ odo^Þ A§Jm|-C[mJm| _| OmH$a
aMZmË_H$ H$m`© Ama§^ H$a|$& g§K emIm H{$
gmW gmW g_mO H{$ C[{ojV, d§oMV d [ro¶S>V
dJm~ H$m e{f g_mO H{$ g_H$j I¶S>m H$aZ{ h{Vw
CZ_| ñdmo^_mZ H$m OmJaU H$a| VmoH$ g§[yU©
qhXy g_mO D§$MZrM, Nw>AmNy>V, Jar]-A_ra
AmoX H{$ ^md H$m{ g_má H$a g§JoR>V eoº$ H{$
gmW Aamï-\>r` VËdm| H$m{ [amñV H$a gH{$$$&
X¡Z§oXZ emIm MbmZ{ dmb{ ñd`§g{dH$m| H{$ obE
`h EH$ ZB© oXem Wr, oOgZ{ AmO g§[yU© X{e
_| g{dm H$m`© H$m EH$ \_O]yV AmYma I¶S>m oH$`m
h¡$& `hr dOh h¡ oH$ AmO X{e _| Z H{$db g{dm
H$m`© H$s [na^mfm ]Xbr h¡ ]pëH$ `h H$hZ{ H$m
AmYma ^r g_má hm{ J`m h¡ oH$ g{dm H$m`© og\©$
B©gmB© o_eZar hr H$aVr h¡$& g{dmH$m`m~ H$m
CZg{ H$ht AoYH$ odemb AmYma AmO g§K
ñd`§g{dH$m| Z{ I¶S>m oH$`m h¡$&

AmO ì`oº$ H{$ OÝ\_ g{ b{H$a (\_mV¥N>m`m)
_¥Ë`w VH$ (e\_emZ KmQ>) H$s g{dm ñd`§g{dH$
H$a ah{ h¢$& g{dm]pñV`m| _| ñdmdbå]Z H{$
Am`m_ Ama§^ H$a [wéf d _ohbmAm| _|
ñdmo^_mZ OmJaU hm{ ahm h¡$&]ƒm| hr Zht,
VéUm| d àm¡T>m| H$m{ ^r gmja oH$`m Om ahm h¡$&
JV df© AH{$b{ oX„r _| 12,000 g{ AoYH$
bm{Jm| H$m{ g{dm ^maVr oX„r H{$ H$m`©H$Vm©Am| Z{
og\©$ VrZ _hrZ{ _| gmja oH$`m$&

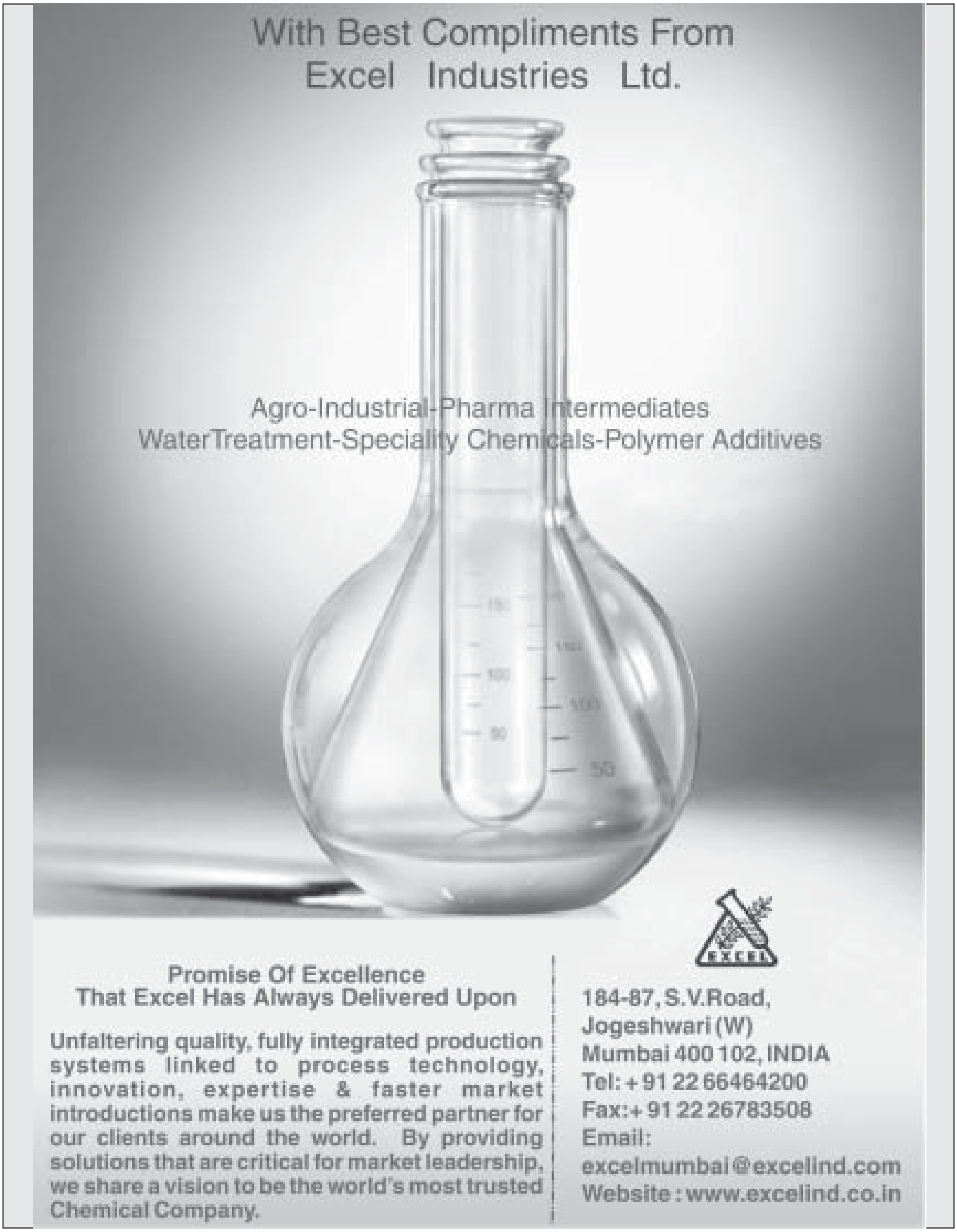
With Best Compliments From
Excel Industries Ltd.
Agro-Industrial-Pharma Intermediates
WaterTreatment-Speciality Chemicals-Polymer Additives
EXCEL
Promise Of Excellence
That Excel Has Always Delivered Upon
Unfaltering quality, fully integrated production systems linked to process technology, innovation, expertise & faster market introductions make us the preferred partner for our clients around the world. By providing solutions that are critical for market leadership, we share a vision to be the world's most trusted Chemical Company.
184-87, S.V.Road,
Jogeshwari (W)
Mumbai 400 102, INDIA
Tel: + 91 22 66464200
Fax:+ 91 22 26783508
Email:
excelmumbai@excelind.com
Website : www.excelind.co.in

C M Y K

Uttan Krishi Sanshodhan Sanstha

The UKSS is Engaged in protection of Nature, Environment and its rejuvenation with the help of highly qualified experinced personalites as its advisory. The UKSS formed its advisory commitee on 30th April 2008, consisting of the members who are athourity in the field of agriculture allied industries.

We are pleased to introduced every member of advisory commitee to the readers of Keshav Srushti Samachar. In this edition you will find the introduction of Dr. Arun Dhuri

Name	-	Dr. Arun Dhuri
Date of Birth	-	28th April 1957
Address	-	5/15, Sachin Society, Mithagar Road, Mulund (E), Mumbai - 400 081
Telephone	-	R. 25635179 M. 9833159183
Education	-	M.Sc.Ph.D. in Entomology from IARI, New Delhi
	-	Recipient of many National Scholarships and Awards
	-	Published more than 25 Papers in scientific journals.
	-	Presented number of papers in National and International conference.
Experience	-	Working in Agrochemical Industry for last 15 years in various positions.
	-	Developed through insight into Indian Agriculture, Plant Protection Systems, solution to farmer needs and new techniques in changing agricultural scenario.
	-	Presently General Manager - Agri Business Development, with Excel Crop Care Limited, Mumbai
	-	Teaching and research in Agricultural University for seven years for post Graduate Corurses (1983-1989)
	-	Many of his students are holding key positions in Agro-Chemical Industry and Academic Institutions.
	-	Developing Collaborative projects for product development with Agri University Scientists.
	-	Data generation monitoring with GLP Laboratories in India and Europe.
	-	Developed new formulations of Glyphosate which are more effective, economical as well as converient for farm use.
	-	Many new insecticidal formulations are under development.
	-	Developed training modules for farmers and dealers.
	-	Registration of Agrochemicals globally including China, South America and EU

केशवसृष्टि गोशाला में गोदान कार्यक्रम

केशवसृष्टि गोशाला में जनवरी और फरवरी महीने में गोदान के ३ कार्यक्रम उत्साह में संपन्न हुए। दि. १४ जनवरी २००९ के दिन गोशाला के ट्रस्टी भाईंदर निवासी श्री. संजय अग्रवाल एवं श्री. अजय अग्रवाल जी ने अपनी मातोश्री स्व. इमरतीदेवी अग्रवाल की स्मृती में गोदान किया। अभी तक अग्रवाल परिवार ने ११ गायों का दान गोशाला को करके अपने मातोश्री का संकल्प पूरा किया है।

दि. ३ फरवरी २००९ को मुंबई स्थित डिडवानीया चॅरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक श्री. रतनलालजी डिडवानीया ने ३ गायों का दान गोशाला में किया। इस कार्यक्रम के समय डिडवानीया परिवार के सभी सदस्य उपस्थित थे। डिडवानीया परिवार ने अभी तक १४ गायें गोशाला को दान स्वरूप दी है।

दि. ७ फरवरी २००९ को पवई के श्री. श्रीकृष्णप्रकाशजी गुप्ता ने भी १ गाय का दान गोशाला में किया।

C M Y K

अध्ययन एवं परीक्षा की तैयारी संबंधी तनाव कैसे दूर करें?

सौ. मंजू पुरोहित

केशवसृष्टि कृषि तंत्र महाविद्यालय में गुरुबार दि. १९ फरवरी २००९ को छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती अत्यंत उत्साह के साथ मनायी गई। इस समारोह की अध्यक्षता विद्यालय के प्राचार्य श्री सदानंद सामंत ने की और मुख्य अतिथि थी श्रीमती मंजू पुरोहित। छत्रपति शिवाजी के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालने के बाद उन्होंने विद्यार्थियों का इस विषय पर मार्गदर्शन किया कि वे परीक्षा की तैयारी संबंधी तनाव कैसे दूर करें।

जो कुछ पढ़ा था याद किया जाए वह ध्यान में या स्मरणशक्ति में कैसे बना रहे, मन की एकाग्रता किस प्रकार बनाई जाए के लिए अध्ययन अभ्यास करते समय तीन बातों पर निर्भर करना चाहिए। १. वाचन (पढ़ना), २. चिंतन (सोच विचार करना) और ३. मनन करना। अभ्यास करते समय मन लगाकर पढ़ना/वाचन करना चाहिए, मन चंचल नहीं होना चाहिए। विद्यार्थियों ने पूछा कि यदि मन चंचल होता हो या इधर उधर भटकता हो तो क्या करना चाहिए। इस पर श्रीमती पुरोहित ने बताया कि मन एकाग्र करने के लिए दो मिनट के लिए आँखे बंद करके खड़े रहिए या बैठे रहिए। अपने इष्ट देव की छवि अपनी आँखों के सामने लाइए, उनको याद कीजिए और अपना ध्यान अपनी सांस पर केंद्रित कर दीजिए। अभ्यास करते समय जीभ तालू से लगाकर वाचन करना चाहिए। सुबह उठने के बाय तुलसी की प्रदक्षिणा करने से सुबह के समय तुलसी से आक्सीजन मिलती है, हवा बहती रहती है और इस प्रकार शुद्ध रहती है। इसी प्रकार ऐसे वातावरण में मन शुद्ध रहता है, इसी लिए ऐसे अनुकूल वातावरण में अध्ययन अभ्यास योग्य प्रकार से आरंभ करना चाहिए। प्रतिदिन तुलसी के पाच पत्ते चबाएं, इससे बुद्धि बढ़ती है और खांसी दूर होती है। अभ्यास करते समय मन चंचल होता है, मन ऊब जाए तो जमीन पर चटाई या आसन बिछाकर शरीर को शिथिल छोड़ देना चाहिए, और थोड़ी देर के लिए शांत सो जाना चाहिए। इस प्रकार थकान दूर होगी। मन प्रसन्न होगा। चेहरे पर पानी के छीटें मारों और चेहरों को साफ रूमाल से पोंछ डालो, इसके बाद अभ्यास के लिए बैठें। अपने मातापिता की अपेक्षाओं पर खरा उतरते हुए अपने आपको कम न समझें। हमेशा यह सोचें कि आप कुछ भी कर सकते हैं।

ॐ
केशवसृष्टी गोशाला

केशवसृष्टी गोशाला में पधारें, गोमाता की सेवा करें, गोवंश के सहवास में मानसिक शांति एवं अलौकिक आनंद प्राप्त करें। यह शास्त्र संमत मान्यता है कि गाय की सेवा करने से पुण्य की प्राप्ति होती है।

निम्नलिखित विविध प्रकार के दान करके आप गोशाला के आधारस्तंभ बन सकते है।

- एक दिन के यजमान रू. ११,०००/- (गोशाला का एक दिन का व्यय वहन करना।)
- एक समय गोशाला की सभी गायों को पंचखाद्य लड्डू खिलाना रू. ११००/-
- मासिक गोग्रास दान रू. ११००/-
- सवत्स गोदान (अधिक जानकारी के लिए गोशाला कार्यालय में संपर्क करें)

गोसेवा में सदैव, आपके कृपाभिलाषी

गोसेवा परिषद

प्रमुख कार्यालय :
३६, निरोजा मॅन्शन, दूसरा माला, ग्रांन्ट रोड पूर्व स्टेशन के सामने, ग्रांन्ट रोड, मुंबई- ४०० ००७.
दूरभाष : २३०१ ४३०६, ३०९१ ७३५०, फैक्स : २३०१ ६०२७

गोशाला :
केशवसृष्टी गोशाला, उत्तन गाँव, गोराई रोड, भाईन्दर पश्चिम, पिन कोड : ४०११०६ जिला ठाणे, महाराष्ट्र.
दूरभाष : २८४५ १०३१, २८४५ ०२५३

|| गवा ग्रासप्रदानेन स्वर्गलोके महीयते ||

वानप्रस्थाश्रम से हो सकती है परमलक्ष्य की प्राप्ती

हिंदू समाज में मानव जाती के संपूर्ण जीवन काल को चार भागों में बांटा गया है। पहला ब्रह्मचर्य आश्रम, दूसरा गृहस्थाश्रम, तिसरा वानप्रस्थाश्रम, और चौथा संन्यास आश्रम। इनमें से सभी आश्रम महत्त्वपूर्ण है। परंतु वानप्रस्थाश्रम वह आश्रम है, जो मनुष्य के जीवन के परमलक्ष्य की प्राप्त का समय माना जाता है। इन चारों आश्रमों को आयु सिमा २५ वर्ष की है। यह माना जाता है कि ५०-७५ वर्ष कि व्यक्ती कि यह आयु सिमा वानप्रस्थाश्रम के अंतरगत आती है। इस आयु में मनुष्य अपने मानव जीवन जिस लिए हमको मिला है, उस उदेश्य की पूर्ती इस समय में ही हर व्यक्त को करनी चाहिए। इस लिए कहा गया है कि मनुष्य जो समय के अनुसार नहीं चलता वह समय व्यतीत होने के पश्चात पछताता है। मनुष्य के चारों आश्रम का कार्य अलग अलग है। यह कार्य इस श्लोक के माध्यम से कहना चाहता हूं..

प्रथमो अर्जीतो विद्या, द्वितीयो अजीतम् धनं।
तृतीयो अर्जीतं पुण्यम्, चतुर्थम् किम करिस्यामी॥

इस श्लोक के माध्यम से यह बताना चाहता हूँ कि सभी मनुष्य को अपना समय अमूल्य मान कर सभी आश्रम का समय और उसका कार्य उसी समय समाप्त होना चाहिए। इस प्रकार से वह जब वानप्रस्थाश्रम के कार्यकाल में प्रवेश करते है। तो उनका कार्य उसी परमलक्ष्य की प्राप्त और पूर्ण जीवन का मूल कार्य करने का होता है। इस समय को वृथा में गंवाना मनुष्य की सबसे बड़ी भूल मानी जायेगी। इस समय का सदुपयोग करके मनुष्य अपने परम लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

प. सुर्यमणि शुक्ल,
व्यवस्थापक
किसन गोपाल राजपुरिया वानप्रस्थाश्रम

केशवसृष्टी वनौषधि केंद्र

अपने केंद्र द्वारा निर्मित आयुर्वेदिक उत्पादनों का निरंतर प्रयोग करें। जिवनभर उत्तम स्वाथ्य का तथा आनंदमय जीवन का सुखभोग करें। इन उत्पादनों में प्रयोग की हुई अनेक काष्ठ्य औषधियों का उत्पादन भी अपने प्रकल्प में प्राकृतिक खाद् द्वारा किया जाता है।

विविध उत्पादनों की सूची

उत्तन बालाकुमारी सिरप
उत्तन रूदन्ती सिरप
उत्तन प्राश
उत्तन जास्वंद तैल
उत्तन ब्राम्ही-आँवला केश तैल
उत्तन रूमालीन तैल
उत्तन श्रवण तैल
ॲलोव्हेरा जैल
ॲलोव्हेरा क्रीम
त्रिफला चूर्ण
सितोपलादि चूर्ण
तालिसादि चूर्ण
हर्बोमाल्ट-एसव्ही
हर्बो-टी
डाईजिसॉल्ट

अधिक जानकारी के लिए हमे संपर्क करें।

उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था
केशवसृष्टी, उत्तन गाँव, गोराई रोड, भाईन्दर पश्चिम,
पिन कोड : ४०११०६ जिला ठाणे, महाराष्ट्र.
दूरभाष : २८४५ ०५२०

आर्तानाम् दुःखनाशनम्

उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था के बहुपयोगी उत्पाद

उत्तन ब्राह्मीआंवला केश तैल

उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था ने अपनी नर्सरी में नीरब्राह्मी (Bacopa Monerea) वनस्पती का अधिक प्रमाण में Growth or plantation किया है। यह ब्राह्मी का Original प्रकार माना जाता है। इसी का उपयोग करके ब्राह्मी आंवला केश तैल का निर्माण किया है।

पैकिंग - १०० मिली, मूल्य रु. ४५/- मात्र

घटकद्रव्य :

नीरब्राह्मी - मेध्य है। कुष्ठदन होने के कारण त्वक्‌रोगों में उपयुक्त है। रुसी को दूर करती है।

आंवला - Vit C से भरपूर है। त्रिदोषहर है। चक्षुष्य और केश्य है। उसी वजह बालों को बढ़ने में मदद करता है।

कपूरकाचरी - त्वक्‌रोगनाशक है।

नागरमोथा - रक्तविकार, नष्ट करता है।

अनंतमूल - रक्तशोधक, सुगंधी द्रव्य है।

वाला - सुगंधी द्रव्य है।

जहामांसी - त्रिदोषनाशक है। बालों की वृद्धि करता है।

गुलाबकली - वर्णप्रसादकर, त्रिदोषनाशक है।

तगर - त्वक्‌रोगनाशक है।

उपयुक्तता - सिर को ठंडक पहुंचानेवाला, बालों की वृद्धि करनेवाला, और रुी दूर करनेवाला उपयुक्त तैल है। बाल लंबे, काले बनाता है। आँखों को भी ठंडक पहुंचती है। बालों के स्वास्थ्य के लिए निरंतर प्रयोग करें।

मात्रा - आवश्यकतानुसार

गुडूची

नाम - संस्कृत- अमृता, हिंदी- गिलोय, मराठी - गुळवेल, अंग्रेजी - Latin - tinospora dordifolia.

यह एक बहुवर्णीय और बड़े वृक्षों पर चढनेवाली बड़ी लता है। पत्र हृदयाकृति होते हैं। काण्ड को काटने से अंदर का भाग चक्राकार दिखता है इसलिए इसे 'चक्रलक्षणा' भी कहा जाता है।

गुण - अमृता सांग्रहिक - वातहर - दीपनीय- श्लेष्म-
शोणित - विषन्धप्रशमनानाम्। (च. स. अ. २५)

अमृता (गुडूची) संग्राहिक, वातहर, दीपन, श्लेष्महर, विषन्ध नाशक है।

''रसायने गुडूची।''

गुडूची उत्कृष्ट रसायन है। ज्वर या अन्य बिमारीके बाद जो दुर्बलता आती है उसे दूर करती है। इससे पित्त अच्छी तरह से बहने लगता है। यकृत की पित्तवाहिनीयों का और आमाशय के अंदर की श्लेष्म त्वचा का अभिष्यन्द कम करता है। इसलिए कमला (Jaundice) में उपयुक्त हैं।

जीर्णअतिसार तथा आव, आम्लपित्त में गिलोय का सत्व देते हैं। जीर्ण आमवात, जीर्णज्वर इ. में उपयुक्त है। यह उत्तम मूत्रजनन है। सभी प्रकार के प्रमेह में विशेषतः मधुमेह, इसका सत्व परिणामकारी है।

त्वक्‌रोगनाशक होने से कण्डू और दाह में उपयुक्त है।

गुडुची कटुकातिक्ता खाडुपाका रसायनी।
संग्राहिणी कषायोष्णा लघ्वी बल्याग्निदीपती।
दोष त्रया मतृड्दाहमेहकासांश्च पाण्डुताम्।
कामला कुष्ठ वातास्त्रज्वर कृमिवमीहिरेत।

उपरोक्त श्लोक से मालूम होता है कि गुडूची कितने गुणों से युक्त है। इसलिए उसे रसायन माना है। जहां तक हो सके ताजा गुडूची के कांड का उपयोग करना चाहिए।

योग -गुडुच्यादि चूर्ण, अमृतारिष्ट, गुडुच्यादि क्वाथ गुडूची सत्व, संशमनी वटी इ.

उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था के सभी उत्पाद अभी आपको वसई से लेकर गोरेगाव तक सभी आयुर्वेदिक मेडिकल स्टोअर्स में उपलब्ध होंगे।

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें - डॉ. श्रुती वारंग, उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था, केशवसृष्टी, दूरभाष - ०२२-२८४५०७२०

रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनी

मार्च मासिक प्रतिवेदन

क्र.	दिनांक	कार्यक्रमों के नाम	वक्ता	सहभागियों की संख्या	स्थल	समय
१.	२८ फरवरी से १ मार्च, ०९	भाजपा-कोल्हापूर शहर जिल्हा कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिबिर	माधव भांडारी, अजय कुलकर्णी, आ. संजय केळकर सुमंत घैसास, प्रफुल्ल जोशी, उज्वल केसकर व रवींद्र साठे	६३	अनंत स्मृती भवन, पन्हाळा	२ दिन
२.	७-८ मार्च, ०९	भाजपा : उत्तर पश्चिम मुंबई जिल्हा, कार्यकर्ता पदाधिकारियों का प्रशिक्षण शिबिर	स्वाती खंडकर, गोपाळ शेट्टी, संजय केळकर ॲड. आशिष शेलार	१९०	ज्ञान-नैपुण्य केंद्र	२ दिन
३.	७-८ मार्च, ०९	जनतंत्र २००९	राजनैतिक पार्टीयों के प्रतिनिधियों की चर्चा तथा प्रबोधिनी द्वारा 'अल कायदा' "War on Terrorism" इन पुस्तिकाओं का विमोचन कार्यक्रम	३००	राजा शिवाजी विद्यासंकुल दादर	२ दिन
४.	१४-१५ मार्च, २००९	समता परिषद-मुंबई कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिबिर	अतुल भातखळकर, अरुण करमरकर, दादा इदाते व रवींद्र साठे	५०	ज्ञान-नैपुण्य केंद्र	२ दिन
५.	२८-२९ मार्च २००९	स्वयंसेवी संस्थाओं के कार्यालय एवं कोषप्रमुख प्रशिक्षण शिबिर	विवेक अत्रे, शरदमणी मराठे, अ.ही. शिंगणे (सहाय्यक धर्मादाय आयुक्त मुंबई), चंद्रशेखर वझे, केशव उपाध्ये, समीर जोगळेकर, अजित मराठे	६४	ज्ञान-नैपुण्य केंद्र	२ दिन

श्री गुरुजी : दृष्टि और दर्शन

माता का पुत्र – हिंदू

अनादि काल से एक महान एवं सुसंस्कृत समाज, जिसे 'हिंदू' कहते हैं, यहाँ इस भूमि के पुत्रके रूप में निवास कर रहा है। किंतु कुछ लोग हैं, जो 'हिंदू' नाम पर आपत्ति करते हैं और कहते हैं कि तुलनात्मक दृष्टि से इसका मूल तो सांप्रदायिक है तथा यह नाम हमें विदेशियों द्वारा दिया गया है। वे हिंदू के स्थान पर 'आर्य' अथवा 'भारतीय' नाम का सुझाव देते हैं।

निस्संदेह आर्य एक स्वाभिमानपूर्ण प्राचीन नाम है, किंतु इसका प्रयोग विशेषतया गत सहस्र वर्षों से अप्रचलित हो गया है। गत शताब्दी में ऐतिहासिक शोध के नाम पर अंग्रेजों द्वारा किए हुए अप-प्रचार ने हमारे मस्तिष्क में धूर्ततापूर्वक बनाए गए आर्य-द्रविड़ विवाद की विषैली जड़ें गहराई तक पैठा दी हैं। अत: 'आर्य' नाम का प्रयोग हमारे उद्देश्य की सिद्धि में स्वत: निष्फलता का कारण बनेगा, क्योंकि हमारा उद्देश्य तो अपने उस संपूर्ण समाज का साक्षात् करना है, जो अतीत और वर्तमान की समस्त संज्ञाओं से निरपेक्ष हिमालय से कन्याकुमारी तक फैला हुआ है।

'भारतीय' भी प्राचीन नाम है, जो अति प्राचीनकाल से हमसे संबंधित है। भारत नाम वेदों तक में मिलता है। हमारे पुराणों ने भी हमारी मातृभूमि को 'भारत' कहा है और यहाँ के निवासियों को 'भारती'। वास्तव में 'भारती' संबोधन 'हिंदू' का पर्यायवाची है, किंतु आज 'भारतीय' शब्द के संबंध में भी भ्रांत धारणा उत्पन्न हो गई है। सामान्यतया यह 'इंडियन' शब्द के अनुवाद के रूप में प्रयुक्त होने लगा है, जिसमें इस देश में रहनेवाली मुसलमान, ईसाई तथा पारसी आदि सभी जातियों का समावेश होता है। इस प्रकार 'भारतीय' शब्द-प्रयोग, जब हम उस विशिष्ट समाज को लक्ष्य कर करना चाहते हैं, हमें भ्रमित कर सकता है। केवल 'हिंदू' शब्द ही उस भाव को पूर्ण एवं शुद्धरीति से व्यक्त करता है, जिसे हम व्यक्त करना चाहते हैं।

यह कहना भी ऐतिहासिक दृष्टि से शुद्ध नहीं है कि 'हिंदू' नाम नूतन है अथवा विदेशियों द्वारा हमें दिया गया है। विश्व के प्राचीनतम अभिलेख 'ऋग्वेद' में हमें 'सप्त सिंधु' नाम मिलता है जो हमारे देश एवं हमारे जन के लिए उपाधि के रूप में प्रयुक्त हुआ है। यह भी भली प्रकार से ज्ञात है कि संस्कृत का 'स' वर्ण कभी-कभी हमारी कुछ प्राकृत भाषाओं में तथा कुछ यूरोपीय भाषाओं में 'ह' में परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार प्रथम 'हप्त हिंदू' तत्पश्चात् 'हिंदू' नाम प्रचलित हो गया। इसलिए 'हिंदू' हमारा अपना गौरवशाली नाम है, जिसके द्वारा बाद में अन्य लोग भी हमें पुकारने लगे।

हिंदू और हिंदुस्थान

बृहस्पति आगम के अनुसार 'हिंदू' शब्द का 'हि' 'हिमालय' से तथा 'न्दु', 'इन्दु' 'इन्दु सरोवर' (दक्षिणी सागर) से लिया गया है। इसप्रकार यह (शब्द) हमारी मातृभूमि के संपूर्ण विस्तार को संप्रेषित करता है। बृहस्पति आगम का कथन है –

हिमालयं समारभ्ययावदिन्दुसरोवरम्।
तं देव निर्मितं देशं हिंदुस्थानं प्रचक्षते॥

(देवताओं द्वारा निर्मित वह देश जो हिमालय से प्रारंभ होकर इंदु सरोवर (अर्थात् दक्षिणी सागर) तक फैला हुआ है, हिंदुस्थान कहलाता है।)

'हिंदू' शब्द का इतिहास

'हिंदू' शब्द हमारे इतिहास के गत एक सहस्र वर्षों के संकटपूर्ण काल से जुड़ा रहा है। पृथ्वीराज के दिनों से लेकर हमारे समस्त राष्ट्र-निर्माताओं, राज्यवेत्ताओं, कवियों और इतिहासकारों ने 'हिंदू' शब्द का प्रयोग हमारे जन-समाज और धर्म को अभिहित करने के लिए किया है। गुरु गोविंदसिंह, विद्यारण्य और शिवाजी जैसे समस्त पराक्रमी स्वतंत्रता-सेनानियों का स्वप्न 'हिंदू-स्वराज्य' की स्थापना करना ही था। 'हिंदू' शब्द अपने साथ इन समस्त महान जीवनों, उनके कार्यों और आकांक्षाओं की मधुर गंध समेटे हुए है। इसप्रकार यह एक ऐसा शब्द बन जाता है, जो संघ-रूप से हमारी एकात्मता, औदात्य और विशेष रूप से हमारे जन-समाज को व्यंजित करता है।

साभार – श्री गुरुजी दृष्टी और दर्शन

भारतीय जनमानस का आदर्श विनयशील मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम

भारतीय जनमानस में त्रेतायुग के इतिहास में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का अनन्य स्थान है। भगवान राम की व्यापकता का अनुमान हम इसी बात से लगा सकते हैं कि जब दो या दो से अधिक परिचित परस्पर मिलते हैं तो 'राम-राम', 'जय राम जी की' आदि कहकर एक दूसरे का अभिवादन करते हैं। इतना ही नहीं लोग अपने बच्चों के नाम भी राम से रखने में पुण्य लाभ मानते हैं। सगुण भक्ति मार्ग की राम मार्गी शाखा के अलावा निर्गुण भक्ति या निराकार ईश्वर की भक्ति में विश्वास रखने वाले कबीर और गुरुनानक ने ईश्वर को राम कहकर संबोधित करते थे।

ऐसे कालजयी और परम अनुकरणीय इतिहास पुरुष का जन्म (अवतार) आज से हजारों वर्ष पहले चैत्र शुक्ला नवमी को दोपहर एक बजे तत्कालीन अयोध्या नरेश महाराज दशरथ की महारानी कौशल्या के गर्भ से हुआ था। महाराज दशरथ इक्ष्वांकु वंश में महाराजा रघु के वंशज थे। भगवान श्रीराम की आरंभिक शिक्षा-दीक्षा महर्षि और कुल गुरु वशिष्ठ के आश्रम में हुई। उनके साथ उनके तीनों भाइयों की शिक्षा भी भगवान श्री राम के साथ कुलगुरु वशिष्ठ जी के आश्रम में हुई, गुरुकुल में रहकर भगवान रामने अस्त्र-शस्त्र चालन, युद्ध कौशल के साथ साथ वेद पुराण आदि का भी अध्ययन किया, जो कुछ वे स्वयं सीखते अपने भाइयों को भी सिखाते, भगवान श्रीराम का अवतरण हुआ है, यह बात ऋषियों, मुनियों और उनकी माताओं को पता थी तो स्वयं भगवान राम को भी इसका ज्ञान रहा होगा किंतु उन्होंने अपने मानवीय जीवन में इसे कहीं प्रकट नहीं किया।

उन्होंने माता-पिता, गुरु तथा ऋषियों का योग्य आदर मान किया और राजपुत्र होने के नाते राज्य अथवा प्रजा से संबद्ध कार्य भी किए। ऋषि विश्वामित्र अपने सहयोगियो के साथ अपने आश्रम में जब यज्ञ, हवन योग- अनुष्ठान करते थे तो मारीच और सुबाहू नामक राक्षस उनमें विघ्न डालने आ पहुंचते थे। इनसे छुटकारा पाने के लिए विश्वामित्र राजा दशरथ से इन्हें मांग ले गए तो राम ने अपने भाई लक्ष्मण के साथ मिलकर मारीच को मार भगाया और सुबाहू को अग्निबाण से भस्म कर दिया। इससे पहले उन्होंने एक ही बाण से ताड़का नाम की राक्षसी का वध किया। यह सब उन्होंने मुनि विश्वामित्र के आदेश पर क्षात्र धर्म के रूप में किया था। बाद में जब ऋषि विश्वामित्र, राम लक्ष्मण को जनक पुरी में स्वयंवर दिखाने ले जा रहे थे तो मार्ग में गौतम नारी अहिल्या पत्थर की तरह निस्पंद पड़ी थी, ऋषि विश्वामित्र के अनुसार वह राम के चरण स्पर्श की प्रतीक्षा कर रही थी; क्योंकि भगवान श्रीराम का चरणस्पर्श ही अहिल्या को उसके पति के श्राप से मुक्ति दिला सकता था। महर्षि के आदेश पर यह कार्य भी सहज भाव से कर दिया।

विदेह नरेश के दरबार में वे स्वयंवर में दर्शक के रूप में ही उपस्थित हुए थे, किन्तु जब उन्होंने देखा कि स्वयंवर में आमंत्रित समस्त राजा-महाराजा शिव धनुष को तोड़ना तो दूर तिनका भर हिला भी नहीं सके तो उन्होंने ऋषि श्रेष्ठ विश्वामित्र से जो उस समय उनके अभिभावक भी थे, शिव धनुष्य पर प्रत्यंगचा चढा महाराजा जनक का संताप दूर करने की अनुमति मांगी, इससे पहले महाराजा जनक की हताशा और धरती को शूरवीर हीन कहने पर क्रोधित हुए अनुज लक्ष्मण को शांत कर मर्यादित किया। उन्होंने बड़े ही विनम्र भाव से धनुष्य को बाएं हाथ से उठाया और दाए से प्रत्यंचा चढाकर आकर्ष खींच दिया और धनुष भीषण शोर के साथ टूट गया।

कुछ समय बाद वहां पधारे भगवान परशुराम के क्रोध को भी उन्होंने अपने शील और विनय से शांत किया। जन्म से लेकर अब

तक की लीलाओं में यद्यपि जनमानस में उनके भीतर अलौकिक ईश्वरीय शक्ती को देखा और प्रणाम किया किंतु स्वयं श्रीराम दशरथ नंदन और अयोध्या के युवराज ही बने रहे। वे अपनी लौकिक मर्यादा में रहकर ही प्रत्येक आचरण करते रहे।

पिता दशरथ और माता कैकयी के आदेश पर १४ वर्ष के वनवास पर जाते समय भरत से वन में मिलते और उन्हें चरण पादुका देते, वन में वनवास की शेष अवधि बिताते, रावण से युद्ध करते तथा उस पर विजय प्राप्त करते हुए कहीं भी वे अपनी मर्यादा का या स्वअनुशासन का उल्लंघन नहीं करते और लोक कल्याण का प्रत्येक कार्य करते रहते है। यही कारण है भारत ही नहीं भारत के बाहर भी, जहां जहां राम कथा का प्रचार प्रसार हुआ है, भगवान राम विनयशील और भक्त वत्सल के रूप में तथा अनुकरणीय चरित्र के रूप में जाने जाते हैं। उन्हीं के नाम पर राम राज्य की कल्पना की गई है और आदर्श रूप में उसे स्थापित करने का प्रयास किया जाता है।

श्री गुरु गोविंद सिंह जी : महान संत

गुरु गोविंद सिंह सिखों के दसवें गुरु थे। उनका जन्म बिहार की राजधानी पटना में वर्ष १६६६ में हुआ था। उल्लेखनीय है कि वर्ष १६७५ में ९ वर्ष की अवस्था में ही उन्हें गुरु बनाया गया। गुरु गोविंद सिंह न केवल सिखों के गुरु थे, बल्कि एक महान योद्धा, कवि और संत भी थे। उन्होंने 'खालसा' की स्थापना की, जो सिख इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण घटना है। उन्होंने मुगलों से लगभग बीस युद्ध लड़े। वे सिखों के अंतिम गुरु हुए और उन्होंने श्री गुरुग्रंथ साहिब को ही स्थायी गुरु घोषित कर दिया। उनके पिता थे नवे गुरु तेगबहादुर जी महाराज।

कहते हैं कि पटना के राजा फतेह चंद और उसकी रानी निःसंतान दंपति थे। एक बार उन्होंने पंडित शिव दत्त से संतान होने का आशीर्वाद मांगा। पंडित ने कहा कि गोविंद सिंह जैसा कोई तेजस्वी बालक यदि उनकी संतान के लिए ईश्वर से प्रार्थना करें, तो उनकी मनोकामना पुरी हो सकती है। राजा रानी ने गोविंद जी से मिन्नत की कि उन्हें उनके जैसा ही तेजस्वी बालक ईश्वर दें। तब गोविंद ने कहा कि कोई भी दूसरा व्यक्ति उनके जैसा नहीं हो सकता। इसलिए वे उन्हें ही अपना पुत्र समझे। रानी उसी दिन से गोविंद को बाला प्रीतम (बाल-देवता) कहने लगीं। यहां तक कि गोविंद और उनके साथियों को राजा रानी के महल में कभी भी आने की छूट भी मिल गई। केवल यही नहीं, बच्चों के लिए खाने और खेलने का एक विशेष कमरा भी बनवाया गया था।

सुरजीत सिंह दुआ व गोबिंद सिंह -फरीदाबाद

केशवसृष्टि समाचार

यह एक पंजीकृत मासिक पत्रिका है, जिसका संस्करण राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रकाशित होता है। यह मासिक पत्रिका गत सात साल से प्रकाशित हो रही है। इसमें आप पायेंगे केशवसृष्टि संस्था की दैनंदिन गतिविधियाँ, आयुर्वेद, कृषि, गौसम्पदा, शिक्षण एवं सामाजिक प्रबोधन पर आधारित लेख।

सदस्यता फॉर्म

संपादक
केशवसृष्टि समाचार,
केशवसृष्टि, उत्तन-भाईंदर (प.),
जि. ठाणे - ४०१ १०६ दूरभाष :-(०२२) २८४५०२४७, २८४५२८५५

मैं केशवसृष्टि समाचार इस मासिक पत्रिका का ग्राहक बनना चाहता/चाहती हूँ।

मैं इसके लिए रु. .... मनीऑर्डर द्वारा संलग्न कर रहा/रही हूँ।

*(कृपया मनीऑर्डर '**केशवसृष्टि समाचार**' के नाम जारी करें।)*

केशवसृष्टि समाचार के लिए सदस्यता दर
मासिक ५ रु., वार्षिक ५० रु.

नाम ....

पता ....

....

दूरभाष/मोबाईल..

हस्ताक्षर

C M Y K

Book your space today

KESHAV SRUSHTI SAMACHAR

Special Advertisement Package. (Annual)

ADVERTISEMENT RATES (For General issuesonly)

		Monthly		Yearly	
	Size	B/W	Colour	B/W	Colour
Full Page	22 x 15 cm.	5000/-	10000/-	45,000/-	96,000/-
Half Page	11 x 15 cm.	3000/-	5000/-	28,800/-	45,000/-
Inside Cover	22 x 15 cm.	--------	10,000/-	---------	96,000/-
Back Cover	18 x 15 cm.	--------	15,000/-	---------	1,44,000/-
Page Sponsor	03 x 15 cm.	2000/-	-----------	24,000/-	

KESHAV SRUSHTI SAMACHAR
Advertisement ORDER FORM

Date :

To,
Keshav Srushti Samachar,
Keshav Srushti, Uttan,
Bhayandar (W) Dist: Thane - 401 106
Tele: 022-28450247/28452855

Dear Sir,
We hereby confirm the booking for Advertisement space in your above magazine for the

issue ____________ OR from ____________ to ____________

Size ____________ Type ____________ Rate ____________

Material : ____________

Payment Terms :____________

Thanking you,
Yours faithfully,

seal & signature of authority

Company's Name, Address

Order Executed By : ____________

Remark : ____________

C M Y K